ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE

24, AKBAR ROAD, NEW DELHI
COMMUNICATION DEPARTMENT

Highlights of the Press briefing Held at 1615 Hours 22.08.2014

Shri Salman Khurshid addressed the media today.

श्री सलमान खुर्शी ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि माननीय अरूण जेटली जी ने आज कहीं चर्चा करते हुए निर्भया कांड में जो दिल्ली शहर में हुआ था, वो दुखित कांड था और मैं समझता हूं कि उसकी परछाईं आज तक हम सब पर है, उसकी चोट को ना हम भूल सकते हैं और ना वो परिवार के लोग भूल सकते हैं। मैं समझता हूं कि मुझे स्वयं उस परिवार से मिलने का अवसर मिला है आप भी बहुत लोग उस परिवार से मिले होंगे और हम समझ सकते हैं, कैसे किसी के घर में भी, किसी के परिवार में भी, किसी के साथ ऐसी दुखद घटना घटे तो वो अपनी जगह उस व्यक्ति के लिए, उस परिवार के लिए, उस समूह के लिए बहुत महत्वपूर्ण घटना होती है। लेकिन कुछ बातें ऐसी होती हैं, कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं जिनका असर बहुत दूर–दूर तक पहुंचता है और हर दिल को झकझोड़ देता है और अगर वो समय आपको याद हो तो कैसा समय था जब कोई ऐसा नहीं बचा था दिल्ली में जो यह मानता हो कि जो कुछ हुआ था उसका उस व्यक्ति से कोई संबंध नहीं था बहुत दुख का विषय था। हम सबकी अपनी–अपनी सोच से और अपनी समझ से जो प्रतिक्रिया हम कर सकते थे, हम किसी का हाथ थाम कर किसी के दुख को दूर कर सकते थे या जो अशांती की व्यवस्था पैदा हुई थी उसमें फिर से शांती की व्यवस्था बन सके, उसमें जो सहयोग हम दे सकते थे, हम सबने दिया। मैं निर्भया कांड की बात कर रहा हूं।

आज अरूण जेटली जी ने कहा, उन्होंने क्या समझ के कहा, उस पर मैं टिप्पणी नही कर सकता हूं लेकिन मैं समझता हूं कि उस बात को लेकर हम लोगों को एक बार फिर से सोचना होगा। छोटी सी घटना थी वो छोटी सी, आशा को कुचलने वाली घटना थी। और वो छोटी सी घटना हो नहीं सकती थी। उसको छोटी सी घटना समझना मैं समझता हूं एक बहुत बड़ा अन्याय सिर्फ समाज के साथ नहीं, उस परिवार के साथ नहीं, उस दिवंगत आत्मा के साथ नहीं, बल्कि हम सब के साथ होगा, अपने आपके साथ भी होगा।

मैं जानता हूं कि उस समय हम लोग सरकार में थे और ऐसी एक घटना का और उस पर जो प्रतिक्रियाएं होती हैं, उस पर जो कुछ लेख लिखे जाते हैं, उस पर आप सबने कुछ ना कुछ अवश्य लिखा होगा। उसका देश की प्रतिभा पर और देश के आचरण पर

जो पूरे विश्व में, लोग देखते हैं, उस पर कैसा होता होगा, इसका आप अन्दाजा लगा सकते हैं। लेकिन ऐसी घटना घटती है उसका सामना करना पड़ता है, उसके बाद उससे जो भी हम सबका नुकसान होता है, उसको कैसे दूर किया जा सकता है जो व्यक्ति विशेष का होता है, उसको कैसे संभाला जा सकता है, उस घाव पर मरहम कैसे लगाया जा सकता है, वो अपनी जगह है और अपनी जगह पर महत्वपूर्ण है। लेकिन व्यवस्था पर जो प्रश्न चिन्ह लगता है, उसको कैसे ठीक किया जा सकता है उसको कैसे सुधारा जा सकता है और उस पर कैसे नियंत्रण पाया जा सकता है, यह अपनी जगह महत्वपूर्ण भी है और मैं मानता हूं कि जो हमारा इसके बारे में जो हमारे विचार या इसके बारे में जो हमारा व्यवहार होगा, उसकी व्यवस्था को ठीक करने में बहुत बड़ा योगदान होता है और उस घटना को यह मान लिया जाता है कि उस घटना से हमारा कहीं यह नुकसान हुआ कि टूरिज्म को कहीं पर क्षति पहुंची है या भारत की छवि को कहीं छति पहुंची है तो इसलिए उसका ज्यादा उल्लेख नहीं होना चाहिए। मैं केवल यह बताना चाहूंगा कि, भाजपा के नेताओं को पहले यह बात समझनी चाहिए कि जहां एक तरफ वो बोलते हैं कि लालकिले पर भी प्रधानमंत्री के भाषण में वास्तविकताएं और सच्चाई सामने रखनी चाहिए चाहे उस पर कोई भी प्रतिक्रिया क्यों ना हो तो मैं यह मानता हूं कि सामाजिक समस्याओं को लेकर इतनी गहरी और गंभीर हम जो कहते सोचते हैं, हमारी करनी और कथनी होती है, उसमें हमको यह हिसाब नहीं लगाना चाहिए तोल के कि इससे हमारा क्या नुकसान हो रहा है व्यवसायिक रूप से, बल्कि यह समझना चाहिए कि हमारा नुकसान, हमारी आत्मा को इससे क्या नुकसान हो रहा है इसके बारे में ऐसी बात कहना या ऐसे हल्के विचार रखना, उससे हमारी आत्मा को कितनी क्षति पहुंचती है, मैं समझता हूं कि यह बहुत आवश्यक है।

हम यह मानते हैं कि आज और इसमें यह कहना कि हम दो महीने या तीन महीने से सरकार में हैं, आज यह चर्चा नहीं हो सकती। आज चर्चा होगी तो इस बात की होगी कि आज का मुखिया कौन है, आज व्यवस्था किसके हाथ में है, और आज व्यवस्था जिसके हाथ में है, उसकी जिम्मेवारी क्या है, और उसका दायित्व क्या बनता है। जिस तरह से हम देख रहे हैं कि महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार हो रहा है, किस प्रकार से बलात्कार की घटनाएं, चारो तरफ से सूचनाएं हमको प्राप्त हो रही है, जिस तरह से आप लोग अपने समाचार पत्रों में और अपने चैनलों पर दिखा रहे हैं, दिन–रात कोई ना कोई एक घटना जिसमें छोटे–छोटे बच्चों को भी, शिशुओं को भी नहीं छोड़ा जा रहा है। मैं समझता हूं कि एक गंभीर बात है। गंभीर बात का सामना इस पर पर्दा डालने से नहीं होगा बल्कि सच्चाई से इसका सामना करने से होगा और उस सच्चाई का सामना करने में अगर हमारा कोई सहयोग मिल सकता है तो हम तैयार हैं। सरकार यह मानती है कि विपक्ष का काम विरोध का होता है, अच्छे काम में कोई विरोध नहीं करेगा चाहे भाजपा ने अच्छे काम का भी विरोध किया हो जब वो विपक्ष में थे, हम अच्छे काम का विरोध नहीं करेंगे, हम यहां से अपील भी कर रहे हैं और हम यहां से मांग भी कर रहे हैं कि ऐसी व्यवस्था पर जहां पर ऐसे प्रश्न चिन्ह लगे हुए हैं, पर्दा डालने से कोई फायदा नहीं है, सीधे–सीधे हम लोगों को इसे संभालना होगा, इसके साथ हमको संघर्ष करना होगा और इस समय जो व्यवस्था का मुखिया है, उसको

स्वीकार करना होगा, यह उसकी जिम्मेदारी बनती है, उसकी जवाबदेही बनती है और उस पर क्या कर सकते हैं वो बताना चाहिए। केवल प्रवचन करना या पर्दा डालना काफी नहीं है। यह बताना चाहिए कि हम क्या करेंगे, कब करेंगे और कैसे करेंगे और कितनी जल्दी करेंगे। और एक बात मैं आप से कह दूं कि आप में से कुछ बंधुओं ने इस बारे में लिखा भी है कि करनी और कथनी में बड़ा अन्तर है। राजस्थान की सरकार से शायद बार–बार यह पूछा जाता है कि एक विशेष व्यक्ति जो आरोपी है, वो कहां है, कहा जाता है कि उनकी अभी तक जानकारी प्राप्त नहीं हो रही है लेकिन आप लोग फोटो दिखा रहे हैं कि वो व्यक्ति दिल्ली में है वो एक प्रमुख स्थान पर है और वो सरकार में एक दायित्व पर सरकार में है और सरकार में वो मौजूद है, इसलिए क्योंकि कानूनी मामला है, इस पर किसी का नाम लेना उचित नहीं होगा। आप लोग जानते हैं, औचित्य निकाल रहे हैं, मैं समझता हूं कि यह सीधा–सीधा एक प्रश्नचिन्ह लगता है सरकार पर कि उनकी करनी और कथनी में कितना अन्तर है। सरकार चलाना कोई आसान बात नहीं है, बहुत कुछ प्रवचन हमने सुने, बहुत कुछ हमने असूल सुने और इनको समझाए गए। अब समय आया है कि सरकार उन असूलों पर चलकर दिखाए, काम करके दिखाए और उसके लिए कहीं कोई बलिदान देने की आवश्यकता है तो आज कुर्बानी और बलिदान करके दिखाएं।

On the question of stand of the Congress party on the observation of the Hon'ble Supreme Court on Leader of Opposition whereas the Speaker has said that they are not going to give the post of LOP to the Congress party, Shri Khurshid said I am not sure that there is clear cut decision on this. I have seen what Mr. Kharge had said, it seems to me that there is no final decision that has been conveyed. Certainly it has been conveyed to us but if the matter comes up in the Supreme Court in any case without any petition being filed or any initiative taken by the Congress party and the matter becomes that of a constitutional point in the Supreme Court, then many people in the political parties might be asked and may be interested in putting forward their views and then Congress party may also do so but whether we would initiate some proceeding etc. The party would take a stand appropriately but this decision was announced very recently, we were disappointed, we had felt that both in the interest of the parliamentary democracy as indeed reflective of the requirements of the important constitutional positions that have to be filled by the constitutional persons, it was necessary for the country to have a Leader of Opposition.

On the question as to what does Congress party feel about the independence of the judiciary in view of the Judicial Accountability Amendment Bill, Shri Khurshid said I will tell you that the Congress party supported the passing of the Bill in both Houses - for this reason, there was a large political consensus on the need to reform the Collegium but you have reported and you have heard

from Mr. Kapil Sibal, you have heard from Mr. Moily, I may have spoken also in a few places, where there are issues that all of us have felt the need to be considered more deeply and more widely. We have all certainly felt along with a lot of senior people outside the Congress party that consultations on a much wider scale should have taken place before the passage of this Bill in order perhaps to obviate the ultimate outcome of the court having to re-examine its earlier judgments but it seems that it did not happen and as a result some people are beginning to prepare petitions that will be filed. As I understand in a next few days Fali Nariman said that he would settle a petition and argue it. So we will have to wait to see and I think at an appropriate stage when it comes to court for hearing, it would go to Constitution Bench - may be of 5 or 7 Judges - I think the Congress party will call all its people who are directly involved in the area of judiciary and judicial reform and then will take a final call.

On another question whether you are ruling out the option of moving the Supreme Court in view of the recent decision of the Speaker not to give the post of LOP to the Congress party; Shri Khurshid said I told you that Mr. Kharge who is the Leader of our Parliamentary group in Lok Sabha has reacted and broadly and I think his reaction was disappointed but this is Speaker's decision and we respect and we accept the Speaker's decision. I think there are issues involved in it that the party might look at it more carefully but I am not in a position today to commit that the Congress will want to go to court or not go to court because there is no clear decision communicated to us and I think the party will examine it appropriately and let you know but if the matter comes to court by itself without the party having taken any initiative and everyone is participating in discussions in court, then I will assume that our party will also share with the court what our view is.

On the question of confrontation between the judiciary and the government with regard to the Judicial Appointment Amendment Bill, Shri Khurshid said there is a classical understanding that everything that happens in parliament is beyond the purview of the court but you do know that things had happened in parliament and in Assemblies and the courts have intervened and interfered - the first such case was confrontation between the judiciary and the UP assembly and that matter had to be resolved through some new measure. This is actually a moot question as to what extent court can interfere in the internal affairs of the parliament and to what extent parliament is sovereign, it is a moot question, and it has touched many times. Every time the speaker has taken a decision about disqualifying somebody because of the disqualification law, parliament has had

to answer to court as well and the courts have intervened. So in the matter of LOP, whether it falls on the one side or the other side, it is difficult for me to judge and say to you right now.

यू–टयूव पर कुछ आपत्तिजनक वीडियो अपलोड होने पर कांग्रेस की प्रतिक्रिया पूछे जाने पर श्री खुर्शीद ने कहा कि जो आप यू–टयूव या इंटरनेट की बात करेंगे, वो सभी लोकतांत्रिक देशों के लिए एक बहुत बड़ा प्रश्न है और प्रयास हुए हैं। हम लोगों ने यू. एन. में भी बात की है, हमारे देश में भी कानून बनाया गया है और समय–समय पर जो इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर हैं, उन लोगों से भी सरकार की बातचीत चलती रहती है, अभी भी चल रही होगी। हमारे समय में उनके साथ बातचीत चलती थी और वो बताते थे कि उन्होंने क्या व्यवस्था बनाई है और किस तरह से जो चीज समाज के हित में नहीं है और समाज के लिए अनुकूल नहीं है, उस पर रोक लगाने के लिए उन्होंने क्या प्रबंध किया है, क्या व्यवस्था बनाई है और वो कमोवेश उस पर काम चल ही जाता है लेकिन जैसा आप जानते हैं कि टैक्नोलोजी के साथ–साथ रहना ऐसी समस्या को लेकर आसान नहीं होता। आज जिस बात का आप विवरण कर रहे हैं उस पर मैं समझता हूं कि गृह मंत्रालय को कुछ करना चाहिए, उनके पास व्यवस्थाएं हैं जिससे इस पर कुछ ना कुछ अंकुश लग सकता है और इसको नियंत्रण में लाया जा सकता है।

On the question that from this podium the Congress party has been speaking against Asa Ram Bapu and now the Spokesperson is defending him, what is the party's stand now, Shri Khurshid said I don't have to endorse whatever is said from the party platform - is the party position and we are all wedded to the party and we are all part of the party and therefore, if we have any vision even to this to agree to party position, that will only be done inside the party but as I said we should not confuse two different issues - one is political party position and one is professional position. I will just give you an example. I do not think our party endorses any murder but lawyers are asking for bail everyday for murder cases. So you can either say that you join the Congress party, you should stop doing anything else and make your money in some other way or you should say that you should earn an honest living now if an honest living means having to argue for a person may or may not be honest, that is really for you to speak to Bar Council of India about and if there is any I am not here for hearing comments and I am here for answering questions.

On the question as to whether the Congress party is satisfied with the position of now on the LOP, Shri Khurshid said I have said that this observation of the Supreme Court -we welcome but it only an observation and they have asked the government to respond given them four weeks and once the government responds and the Supreme Court makes up its mind whether it wants to proceed

any further, we would then be in a position to decide whether we want to assist the Supreme Court one way or the other and I am sure other political parties would want to do the same.

On the question whether the Congress party would want to be impleaded in this case, Shri Khurshid said sometimes the court itself, in constitutional issues, gets states and political parties impleaded, sometimes people seek to be impleaded, but as I have said till such time as the government gives the response to the court and the court moves forward, I don't think that it would be appropriate for me to comment and it would be pre-mature for me to respond. Our party will wait for the appropriate reply to be filed by the government.

On the question of Teesta Seetalwad tweeting and showing Baghdadi as equal to 'Kali', Shri Khurshid said you are asking wrong person this question. You are all media people. Media's fundamental tool is freedom of expression and therefore, we must respect it to the maximum but to be honest, everybody who believes in freedom now is more and more convinced that there are limits to freedom and the limits to freedom frankly speaking have been in a classical terms described as my freedom to swing my arm ends where your nose begins. You have to take a balanced view from both sides but who should decide this, should it be decided by the government or by another adjudicatory body either from within the press or from the outside the press or a judicial office. That is something which is still open question in our society, it is still being debated and I would imagine that the press has a major role to play then. You can really judge yourself when this kind of portrayal is done, whether it is a portrayal that would be harmful to our society. I am quite clear that just taking offence is not enough, just feeling sense of hurt is not enough but if that leads to some kind of an outrage that can cause physical damage, loss of life, loss of property and law and order situation, then you need to look at it more carefully but I think it is for media to examine more carefully.

(Tom Vadakkan)
Secretary
Communication Deptt.